जनवाचन आंदोलन

जिंदगी को समझने के दो नजरिए हैं। कुछ लोग मानते हैं कि भाग्य से ही जिंदगी में बड़े बदलाव आते हैं। ... कुछ दूसरे लोग मानते हैं कि जिंदगी में जो कुछ मिलता है वह कर्म के जरिए ही। ... सच भी है कि संयोगों से जीवन नहीं चलता। पेड़ से फल कभी संयोग से टपकते हैं। संयोग है कि आपको तब भूख भी लगी हो। लेकिन ज्यादा फल खाने हैं या बेचने हैं तो पेड़ से फल के टपकने का इंतजार नहीं किया जा सकता। तब तो फल तोड़ने ही पड़ते हैं। ... जिंदगी को निर्धारित करने में भाग्य बड़ा है या कर्म – यह जानने-समझने के लिए पढ़िए यह पुस्तिका।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

भाग्य बड़ा या कर्म

विष्णु नागर

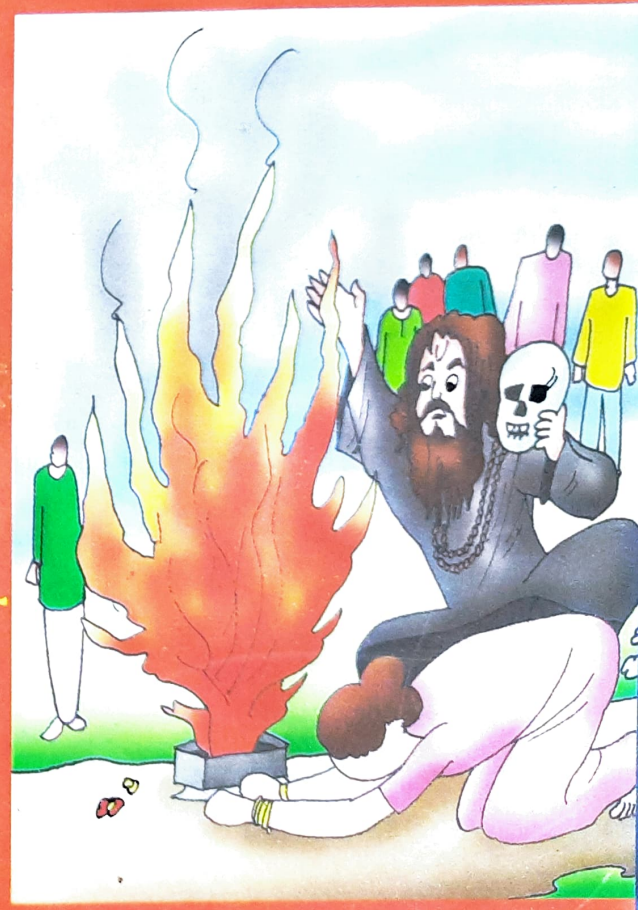

891 NAG

भाग्य बड़ा या कर्म

विष्णु नागर

ABN-767

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

भाग्य बड़ा या कर्म *विष्णु नागर*	**Bhagya Bada Ya Karma** ***Vishnu Nagar***
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	***Copy Editor*** Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन मनोज पंडित	***Illustration*** Manoj Pandit
ग्राफिक्स अभय कुमार झा	***Graphics*** Abhay Kumar Jha
कवर अनु	***Cover*** Anu
द्वितीय संस्करण मार्च, 2011	***Second Edition*** March, 2011
सहयोग राशि 18 रुपये	***Contributory Price*** Rs. 18.00

Publication and Distribution
Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email :bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS MARCH 2011 1K 1800 JVA 0118/2011

भाग्य बड़ा या कर्म

अक्सर लोग इस बात पर बहस करते हैं कि भाग्य बड़ा या कर्म?

कुछ लोग मानते हैं कि भाग्य बड़ा है, कुछ लोग मानते हैं कि कर्म।

कुछ लोग कहते हैं कि जिसको देता है भगवान, छप्पड़ फाड़कर देता है; जिसकी किस्मत अच्छी है, वह कुछ न करे तो भी उसे सबकुछ मिलता है।

कुछ कहते हैं कि कर्म तो करना ही पड़ता है, मगर भाग्य साथ न दे तो कर्म करने का भी कोई फायदा नहीं। वे अपनी बात के पक्ष में फिर फटाफट उदाहरण देने लगते हैं। वे कहते हैं कि वह आदमी मेहनती भी था, प्रतिभा भी उसमें थी, मगर भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया तो वह कुछ नहीं बन सका। और फलां को देखो, उसे कुछ नहीं आता, पर किस्मत का धनी है तो उसके पास आज सबकुछ है।

सिर्फ कर्म करने से सबकुछ हासिल हो सकता है– इसमें भरोसा रखनेवाले कम हैं।

वैसे लोग कहते हैं कि गीता कर्म का पाठ सिखाती है। वह कहती है कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो। लेकिन दिल से इस बात को कोई मानता नहीं। सबको भाग्य-रूपी फल के अचानक पेड़ से टपकने का इंतजार रहता है। सबको छप्पर के फटने की प्रतीक्षा रहती है। एक दिन उनकी छप्पर फटेगी तो घर में सोना ही सोना बरस जाएगा। फिर जीवन भर मौज करो। आप मौज करो, आपकी औलादें भी मौज करें। और उनकी औलादें भी मौज करें।

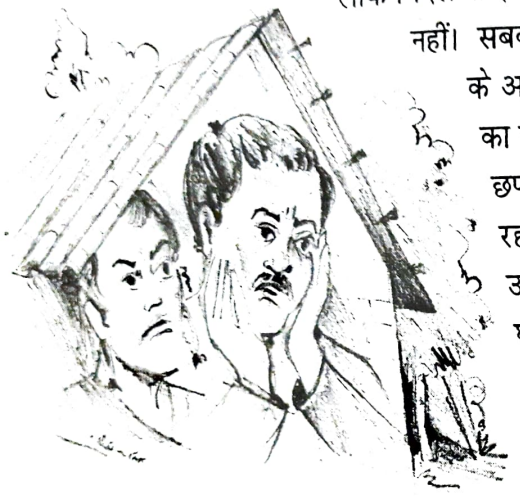

लेकिन ज्यादातर लोगों का छप्पर फटता नहीं। छप्पर टूटता जरूर रहता है। उसमें से बरसात का पानी गिरता रहता है। उसमें से कड़ी धूप आती रहती है। उसमें से धूल गिरती रहती है। यह फर्क ही मालूम नहीं पड़ता कि वे सड़क पर रह रहे हैं या छत के नीचे! सब एक समान हो जाता है।

हमारे भारत देश में भाग्य का खेल कुछ ज्यादा ही चलता है। भाग्य बताने के नाम पर ज्योतिषी, तांत्रिक वगैरह मोटे माल काटते हैं। ज्योतिषी लखपति और फिर करोड़पति हो जाते हैं। लेकिन ज्योतिषी जिनका भाग्य बांचते हैं, वे वहीं के वहीं रह जाते हैं। नग बेचने वाले नग बेचते रहते हैं। तंत्र-मंत्र करने वाले तंत्र-मंत्र करते रहते हैं। कोई भूत को भगाता रहता है। कोई चुड़ैल को शरीर से उतारता रहता है। लोग उस तरफ तुरंत जाते हैं। मेहनत की कमाई इन कामों में फूंकते जाते हैं। और जितने गरीब थे, उससे ज्यादा गरीब हो जाते हैं।

लेकिन जो भाग्यवादी हैं, उन्हें आप इसका सारा दोष नहीं दे सकते। हमारे यहां इतनी ज्यादा गरीबी है कि लोग अपने बीमार बेटे-बेटी, माता-पिता, भाई-बहन, भाभी-चाची का इलाज नहीं करा पाते। सरकारी अस्पताल है, मगर बहुत दूर है। उनमें इलाज की व्यवस्था नहीं है, गरीब आदमी को वहां टरका दिया जाता है। महंगा इलाज वे करा नहीं सकते। देसी इलाज का कई बार असर नहीं होता। मजबूर होकर आदमी भाग्य के भरोसे हो जाता है। वह झाड़-फूंक करवाने लगता है। अपने घर का आदमी मर रहा हो तो आदमी कुछ तो करेगा! भाग्य पर, ईश्वर

पर भरोसा न करे तो वह क्या करे? कहां जाए? कौन सुनेगा? गरीब की वैसे भी कौन आसानी से सुनता है?

हमारे समाज में एक तरफ बहुत गरीबी है, दूसरी तरफ उनसे बहुत अमीरी भी है। कुछ के पास इतना है कि उनसे संभाला नहीं जाता। कुछ के पास इतना कम है कि भूखे पेट बच्चों को भी सोना पड़ता है। कबूतर-कौवा तो कहीं-न-कहीं से अपने या बच्चों के लिए दाना फिर भी जुटा लेता है। मगर आदमी वह भी नहीं कर पाता। इतनी ज्यादा गरीबी देखकर पैसे वाला भी कई बार डर जाता है। उसे भी कई बार लगता है कि कल पता नहीं, उसका भी क्या होगा? कल पता नहीं कौन उसका कत्ल करने आ जाएगा? पता नहीं कौन अपहरण कर लेगा? पता नहीं कब उसकी नौकरी छिन जाएगी? तो वह भी पूजा-पाठ करने लगता है, मंदिर-मस्जिद दौड़ने लगता है, उपवास रखता है, अंगूठियों पर अंगूठियां पहनता चला जाता है, यज्ञ कराता है, हवन कराता है, तांत्रिकों के चक्कर में फंस जाता है।

इस तरह भाग्य का खेल चलता रहता है। ज्योतिषियों-तांत्रिकों की मौज होती रहती है।

अच्छा, एक सच यह भी है कि जीवन है तो उसमें चमत्कार भी होते हैं। अब मान लीजिए, किसी ने लाटरी का टिकट खरीदा। अब लाटरी का टिकट हजारों-लाखों लोग खरीदेंगे तो किसी की तो लाटरी खुलेगी ही – यह तो तय है। सबको तो लाटरी का पैसा मिलेगा नहीं। सभी को मिल जाए तो क्या वह लाटरी हुई? लेकिन जिसको भी मिलेगा, शुद्ध संयोग से ही मिलेगा। कुछ लोग पचास बार, सौ बार टिकट लेंगे, मगर लाटरी उनकी नहीं खुलेगी। लाटरी तो लाखों में एक की या दो की या तीन की ही खुलनी है न! इस तरह किसी की एक बार में ही खुल जाएगी। अब आप कह दीजिए कि उसकी किस्मत अच्छी थी। दिमाग से मत सोचिए तो यही बात सही लगेगी।

वैसे जीवन में संयोग होना कोई बड़ी बात नहीं है। ध्यान से देखें तो दो-चार दिन में कोई-न-कोई संयोग होता ही रहता है। संयोग से ही यह पुस्तिका आप पढ़ रहे हैं। आप घर से जल्दी निकलते हैं कहीं जल्दी पहुंचने के लिए। अक्सर जल्दी पहुंच जाते हैं। लेकिन कई बार लाख कोशिश के बाद भी जल्दी नहीं पहुंच पाते। कई बार यह भी संयोग होता है कि वहां पहुंचकर पता चलता है कि

जिससे काम था, वह खुद भी अभी आया है। इसलिए देर से आने का भी कोई नुकसान नहीं हुआ। कई बार आप रेलवे स्टेशन देर से पहुंचते हैं और आपकी ट्रेन भी देर से आती है। कई बार आपने जो शर्ट पहनी, उसी तरह की शर्ट आपके दोस्त ने भी पहनी होती है। कई बार आप जिसके घर जाने के लिए निकल रहे हैं, वह खुद आपके घर आ जाता है। कई बार जल्दी सोते हैं, जल्दी उठने के लिए, लेकिन फिर भी नींद देर से खुलती है। नींद इतनी गहरी होती है कि घड़ी का अलार्म तक सुनाई नहीं देता।

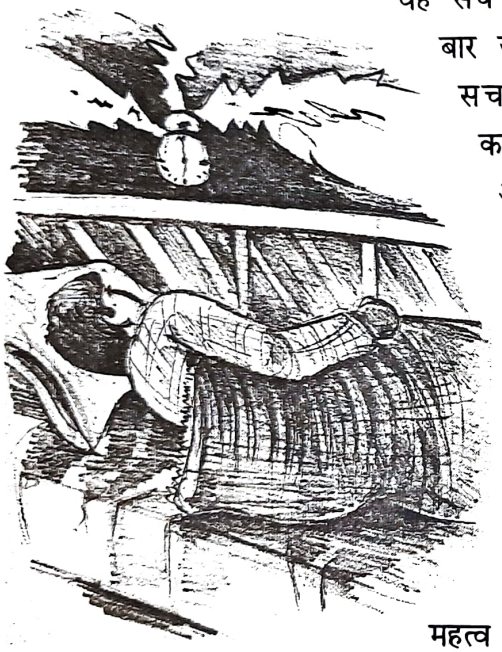

कई बार जो सपना देखते हैं, वह सच हो जाता है। कई बार जो सोचते हैं, वह सच हो जाता है। कई-कई तरह के अच्छे-बुरे संयोग जीवन में होते रहते हैं। यह अलग बात है कि हम उन संयोगों पर ध्यान नहीं देते। उन पर गौर नहीं करते। लेकिन कई बार संयोगों को इतना महत्व दे देते हैं कि जैसे यही हमारे भाग्य में लिखा था।

दरअसल हरेक की जिंदगी में कभी-न-कभी, कुछ बड़े संयोग होते हैं। ऐसी चीजें, ऐसी बातें हो जाती हैं जिनकी उम्मीद हम नहीं

करते। ऐसी घटनाएं हो जाती हैं जिनसे जीवन की धारा बदल जाती है। कई बार संयोग से बुरा हो जाता है, कई बार अच्छा। कई बार ऐसा भी होता है कि आज लगता है कि बहुत बुरा हो गया, मगर कल लगता है कि अच्छा हुआ कि वैसा हुआ। उसके उलट भी होता है। तो जीवन में छोटे-बड़े सब तरह के संयोग होते ही रहते हैं। लेकिन बड़े संयोग रोज नहीं होते।

रोज हो भी नहीं सकते। कभी ऐसा होता है कि सालों से जो समस्या सुलझ नहीं रही थी, अचानक एक दिन सुलझ जाती है। लेकिन ऐसा रोज नहीं हो सकता। यह संभव ही नहीं है। लेकिन इसका यह मतलब भी नहीं कि जो संयोग हुआ वह हमारे भाग्य से हुआ। वैसे संयोगों से जीवन नहीं चलता। पेड़ से फल कभी संयोग से टपकते हैं। संयोग है कि आपको तब भूख भी लगी थी। लेकिन ज्यादा फल खाने हैं या बेचने हैं तो पेड़ से फल के टपकने का इंतजार नहीं किया जा सकता। तब तो फल तोड़ने ही पड़ते हैं। फल के गिरने का इंतजार करेंगे तो ज्यादातर फल पेड़ पर सड़ जाएंगे। फल को सड़ाना बुद्धिमानी है या तोड़ना? गिलहरी को भी फल खाना होता है तो वह पेड़ पर चढ़ती है। फिर फल कुतरती है। बंदर को भी फल के लिए पेड़ पर चढ़ना होता है। इसलिए फल पाना है तो मेहनत करनी ही पड़ती है। फल तोड़ने ही पड़ते हैं। संयोग का इंतजार नहीं किया जाता। फल के गिरने की प्रतीक्षा नहीं की जाती।

रोज तो आदमी को मेहनत ही करनी पड़ती है। परिश्रम ही करना पड़ता है। कोशिश ही करनी होती है। लड़ना ही होता है। दौड़ना-भागना ही पड़ता है। निराश होना ही पड़ता है। हौसला बनाए रखना ही पड़ता है। कई बार चुप रहना पड़ता है। कई बार बहुत धीरज रखना पड़ता है। उम्मीद रखनी होती है, तब कुछ होता है, तब कुछ मिलता है। इसलिए संयोग से कभी-कभी ही कोई बड़ी बात होती है। बाकी सब कुछ तो बिना संयोग के होता है। फल तोड़ने ही पड़ते हैं। फल के टूटकर गिरने का इंतजार करने की मूर्खता नहीं की जाती। संयोग से जीवन नहीं चलता। लेकिन श्रम से चलता है। मेहनत से चलता है।

लेकिन ज्यादातर लोग फिर भी भाग्य में विश्वास रखते हैं। क्यों? कुछ गड़बड़ी तो हमारे समाज में भी है। हमारे यहां जो ताकतवर है, पैसेवाला है, वह गरीबों के तमाम हक हड़प जाता है। गरीबों के नाम पर आया अनाज-पैसा सब खा जाता है। कानून-कायदे को ठेंगा दिखाता है। वह जो तय करता है वह कायदा होता है। उसका हित ही, सारे गांव का, सारे मोहल्ले का, सारे शहर का, सारे प्रदेश का, सारे देश का हित होता है। उसके लिए उसका हित, उसके परिवार का फायदा सबसे प्रमुख होता है। वह अपने अलावा, अपने लोगों के अलावा किसी के बारे में नहीं सोचता। वह दूसरों

के बारे में सोचना नहीं चाहता। वह मानता है कि वह दूसरों के बारे में सोचेगा तो उसका फायदा कैसे होगा? उसका मतलब कैसे सधेगा? उसके अपनों का भला कैसे होगा? आप उसके नहीं हैं तो आपका काम वह नहीं करेगा। आप जाति-भाई हैं तो हो सकता है आपका काम हो जाए। आप नहीं हैं तो हो सकता है नहीं हो। आप उसके धर्म के हैं तो हो सकता है आपका काम हो जाता। नहीं हैं तो हो सकता है नहीं हो। आप उसके इलाके का हैं तो हो सकता है आपका काम हो जाए। नहीं हैं तो हो सकता है नहीं हो।

रिश्वत देने को पैसा है तो संभावना है कि आपका काम हो जाएगा, नहीं है तो आपका नहीं होगा। आप भटकते रहो, दौड़ते रहो। कुछ नहीं होगा। क्लर्क पचास दिक्कतें बता देगा। एक चीज ले जाओ तो कहेगा कि दूसरी कहां है? दूसरी ले जाओ तो कहेगा, तीसरी कहां है? काली स्याही से लिखा है तो कहेगा नीली से क्यों नहीं लिखा? और नीली से लिखो तो कहेगा किस बेवकूफ ने कहा था कि नीली से लिखो? काली से लिखना चाहिए था। कानून यही कहता है। जाओ फिर से लिखकर लाओ। इस तरह वह उलझाता रहेगा, परेशान करता रहेगा।

सचमुच काननू-कायदे से चीजें चलें तो भाग्यवाद का जोर कम हो। बेरोजगार आदमी को काम मिले तो वह बदलेगा। बीमार को इलाज की सुविधा मिले तो वह भाग्य के अलावा भी कुछ सोचेगा। सबके पेट में रोटी हो, रहने को घर हो, पहनने

AZIM PREMJI FOUNDATION LIBRARY Accn. No. ADN 7601

को कपड़े हों तो सब अलग तरह से सोचेंगे। भाग्यवाद का शिकंजा टूटेगा। पूरी तरह भले ही नहीं टूटे, मगर कमजोर जरूर होगा। बहुत-सा भाग्यवाद तो इसलिए भी है कि लोगों को जरूरी सुविधाएं नहीं मिलतीं, अवसर नहीं मिलते। किसी का बच्चा बीमार है, उसके पास कम पैसा है मगर मुफ्त इलाज की सुविधा उसे मिलती है, डाक्टर-नर्स उस पर ध्यान देते हैं, दवाइयां उसे मिलती हैं तो पहले वह अपने बच्चे का ठीक से इलाज कराएगा। किस्मत के बारे में वह बाद में सोचेगा। बच्चा ठीक हो जाएगा तो क्यों सोचेगा? वह बात-बात में भाग्य की बात क्यों करेगा? वह अंबानी तो है नहीं, अमिताभ बच्चन तो है नहीं कि कभी वैसे संतुष्ट नहीं होगा! इतना मिल गया है तो उतने के लिए दौड़ेगा! वह दौड़ता-भागता-हांफता-गिरता-पड़ता ही रहेगा, और समझेगा, यही जीवन की खुशी है!

सच तो यह है कि भाग्य से दरअसल कुछ खास नहीं होता। न कोई करोड़पति बनता है, न प्रधानमंत्री बनता है, न विद्वान बनता है। अब यह अलग बात है कि आप धीरूभाई अंबानी के बेटे हैं तो आप मुकेश अंबानी और अनिल अंबानी ही होंगे। खुद बचपन से अरबों के मालिक ही होंगे। लेकिन धीरूभाई अंबानी ने तो किसी करोड़पति के यहां जन्म नहीं लिया था। उसने धीरूभाई अंबानी बनने के लिए न जाने कितने पापड़ बेले

थे। ठीक काम भी किए थे, गलत काम भी किए थे। मेहनत भी की थी, तिकड़में भी की थीं। तरह-तरह से पैसा पैदा किया था। न सबकुछ जायज किया था, न सबकुछ नाजायज किया था। उनके बेटों ने भी पैसा कमाना अपना धरम बनाया तो एक दिन उनका बड़ा बेटा मुकेश अंबानी दुनिया का सबसे अमीर आदमी बन गया। अपनी तरह से उत्पन्न उसने भी किया था। वह चुप नहीं बैठा रहा था। फल के टपकने का इंतजार नहीं करता रहा। हां, यह तो आपने सुना होगा कि पैसा, पैसे को खींचता है। गरीब को हर दिन, हर रुपया कमाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन जो थोड़ा अमीर होता है, वह बैंक में पैसा बचाकर रखता है तो उस पर भी उसे मुफ्त में ब्याज के रूप में पैसा मिलता है। वही पैसा अगर वह शेयर बाजार में लगा दे तो उसके पास बहुत पैसा आता है। बस शेयर बाजार खेलने के नियम-कायदे उसे आने चाहिए। सारा ध्यान उधर ही लगा होना चाहिए तो बिना मेहनत के भी पैसा बरसता रहता है। इसलिए शेयर बाजार में पैसा कमाने की लिए भी दिमाग चाहिए, अनुभव चाहिए। वहां भी संयोग से, भाग्य से बहुत कुछ नहीं होता।

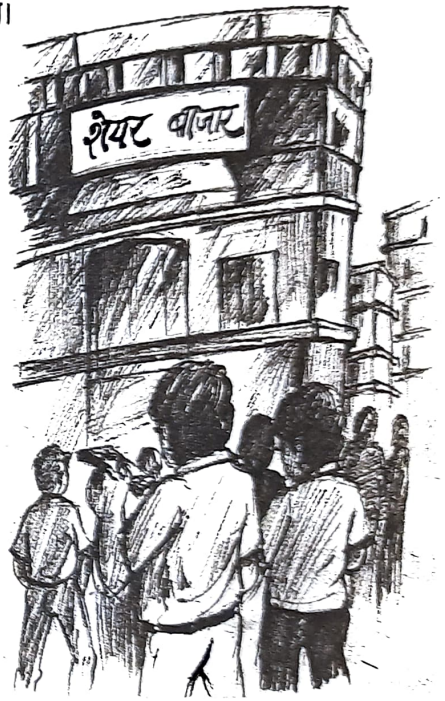

अब कोई पूछेगा कि कोई धीरूभाई अंबानी के यहां ही क्यों जन्म लेता है और कोई गरीब के घर जन्म क्यों लेता है? क्या यह किस्मत का खेल नहीं है?

नहीं है। इसलिए नहीं है कि एक स्त्री का एक पुरुष से संगम होगा तो बच्ची या बच्चा होगा ही। अब यह अलग बात है कि आदमी में या औरत में खास तरह की कोई कमी है तो बच्चा-बच्ची नहीं होगा। अगर वे परिवार-नियोजन के उपाय अपनाएंगे तो बच्ची-बच्चा नहीं होगा। अगर वे पेट में पल रहे बच्चे-बच्ची का गर्भ गिरवाने का गलत काम करेंगे तो बच्चा-बच्ची नहीं होगा। और अगर स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी हैं तो वे चाहेंगे कि उनके घर पर संतान हो। तो कहने का मतलब यह है कि मर्द और औरत के संयोग से बच्चा तो होगा ही। अगर औरत, औरत है, लड़की, लड़की है तो पुरुष या लड़के के संयोग से, पति और पत्नी के संयोग से, बच्चा होगा। औरत कोई भी हो, मर्द कोई भी हो। औरत गरीब है और मर्द अमीर है तो भी बच्चा होगा। इसके विपरीत स्थिति है तो भी बच्चा होगा। औरत विदेशी है, मर्द भारतीय है तो भी बच्चा होगा। इसके विपरीत स्थिति है तो भी बच्चा होगा। अमीर

के घर पर भी होगा और गरीब के घर पर भी होगा। जिस पुरुष और जिस स्त्री के संयोग से होगा, उसके कुछ गुण-धर्म बच्चे में भी आएंगे। कुछ गुण-धर्म स्वाभाविक रूप से उसे मिलेंगे, कुछ आसपास को देखकर-सुनकर वह सीखेगा-समझेगा। इसलिए जो बच्चा गरीब के घर होगा, वह गरीबी में पलेगा। मध्य वर्ग के किसी घर में जो होगा, वह मध्य वर्ग के लोगों की तरह पलेगा-बढ़ेगा, सीखेगा-समझेगा।

हमारे यहां गरीब वर्ग और अमीर वर्ग के लोगों के बीच तो आपस में शादियां होती नहीं। होतीं तो गरीब की मां का बेटा अमीर होता या गरीब पिता की बेटी अमीर होती। गरीब, गरीब के यहां शादी करता है, अमीर, अमीर के यहां। इसलिए बच्चे की हैसियत भी बचपन से ही तय हो जाती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि गरीब के बच्चे को मौका मिले तो वह भी आगे नहीं बढ़ सकता है। लेकिन चमत्कार भी होते हैं, संयोग भी होते हैं। पत्थर की चट्टान में भी रही थोड़ी-सी जगह पाकर मिट्टी जम जाती है। उसमें कहीं से बीज पड़ जाता है। और बरसात के पानी से वहां

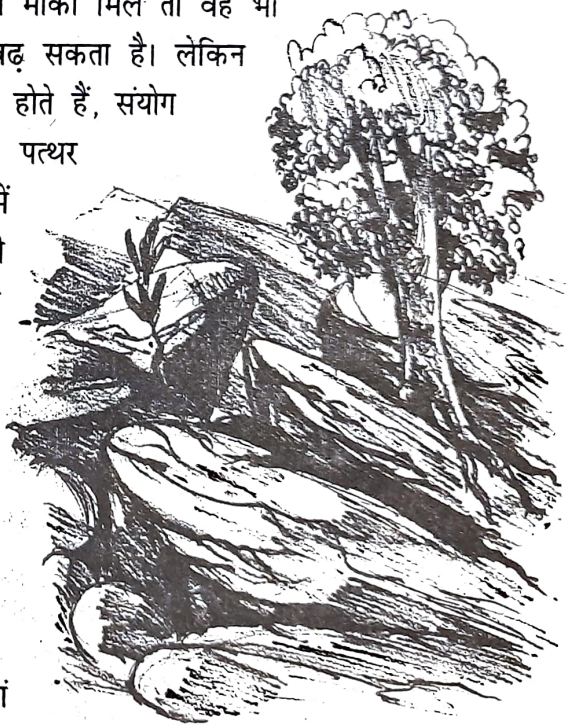

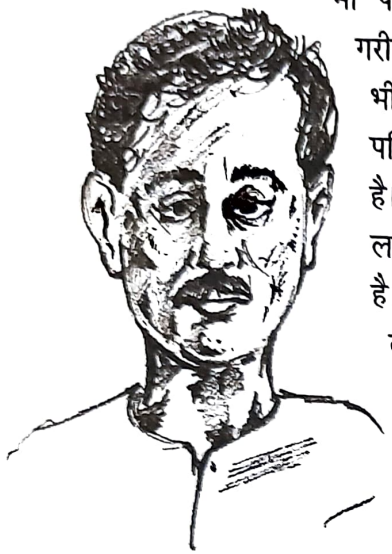

भी पौधा उग आता है। इसी तरह गरीब के घर में पला-बढ़ा बच्चा भी मिट्टी-पानी-धूप पाकर उस परिस्थिति में भी आगे बढ़ जाता है। वह प्रेमचंद बन जाता है, वह लाल बहादुर शास्त्री बन जाता है। वह अंबानी बन जाता है। लेकिन कोई-कोई बन पाता है, हरेक कोई नहीं बन पाता। आम का एक पेड़ तो संयोग से कहीं उग सकता है, मगर आम का बगीचा संयोग से नहीं बनता। उसके लिए तो आम के कई-कई पेड़ सोच-समझकर लगाने पड़ते हैं। उनकी ठीक से सार-संभाल करनी पड़ती है। हवा-धूप-पानी उन्हें मिले, इसकी तरफ ध्यान देना होता है। तब जाकर बरसों में आम का बगीचा बनता है। और गुलाब का पौधा उगाना हो तो उसकी तो कलम लगानी पड़ती है। और गुलाब का बगीचा बनाना हो तो उसकी कई जगह कलमें लगानी पड़ती हैं। इसलिए पूरे समाज, पूरे देश के लोगों को खाना-कपड़ा मिले, घर मिले, आगे बढ़ने-बढ़ाने के अवसर मिलें तो प्रयत्न करने

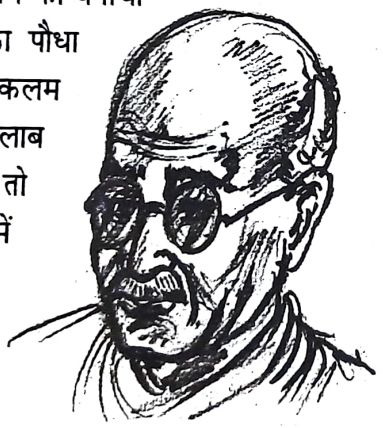

पड़ते हैं। तब सब बढ़ेंगे। कई-कई प्रेमचंद बनेंगे, तब कई-कई महात्मा गांधी बनेंगे, तब कई-कई वाल्मीकि बनेंगे, तब कई-कई कालिदास बनेंगे।

अगर किसी देश ने ऐसा समाज बनाया है कि सबको खाने-पीने-रहने-जीने की सुविधा मिले तो सब भौतिक रूप से सुखी होंगे। ऐसा समाज नहीं बनाया है तो थोड़े लोग सुखी और ज्यादातर लोग दुखी होंगे। भयंकर जातिवाद होगा तो नीची समझी जाने वाली जातियों के ज्यादातर लोग गरीबी, भूख, शोषण, अत्याचार की गिरफ्त में होंगे। जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष होगा, नीचे के लोग ऊपर आएंगे तो उन सबकी किस्मत बदलेगी। भाग्य बदलेगा। देश का भाग्य बदलेगा। दुनिया में ऐसे बहुत से देश हैं जहां सबको खाना-कपड़ा-मकान मिलता है। सबको नहीं मिलता तो ज्यादातर को मिलता है। जो गरीब होते हैं, वे भी इतने गरीब नहीं होते कि तन पर एक कपड़े के अलावा कुछ न हो। लेकिन भौतिक रूप से संपन्न देश के लोगों ने परिश्रम किया है, मेहनत की है। वे संयोग से समृद्ध नहीं बन गए। दुनिया में कोई भी देश, कोई भी आदमी जब भी आगे बढ़ा है, समझ-बूझ से बढ़ा है।

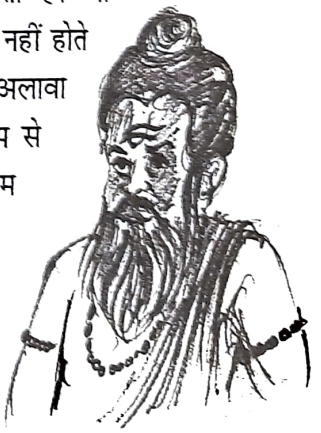

अक्ल भी चाहिए, मेहनत भी। मेहनत करने से अक्ल भी आती है। खेती भी संयोग से नहीं होती। ठीक है कि मिट्टी का अच्छा होना भी जरूरी है, बरसात ठीक होना भी जरूरी है, मगर परिश्रम सबसे ज्यादा जरूरी है। परिश्रम न हो तो अच्छी मिट्टी क्या करेगी? अच्छी

वर्षा क्या करेगी? बढ़िया धूप क्या करेगी? परिश्रम होगा तो कोई संयोग भी शायद साथ दे दे, अच्छी बारिश साथ दे दे। नहीं हो तो क्या साथ देगा? किसका साथ देगा?

जो समाज के कमजोर वर्गों से आते हैं, गरीब-गुरबा हैं, उन्हें अपने लिए भी मेहनत करनी होगी, अपने समाज के लिए भी करनी होगी, अपने देश के लिए करनी पड़ेगी। और परिश्रम का मतलब सिर्फ शरीर की मेहनत नहीं है। परिश्रम का मतलब है सब तरह का परिश्रम। आगे बढ़ने की हर तरह की कोशिश। खुद बढ़ने की हर तरह की कोशिश। खुद बढ़ने की कोशिश, और अपने साथ के अपने जैसे लोगों को बढ़ाने की कोशिश। जहां लड़ने की जरूरत हो, वहां लड़ने की कोशिश। जहां सामूहिक रूप से, मिलजुलकर प्रयत्न करने की जरूरत है, वहां मिलजुलकर प्रयास करने की कोशिश। देश में जो गलत चल रहा है, उसका विरोध करने की कोशिश। जो सही हो रहा है, उसका साथ देने की कोशिश। अपनी ताकत को पहचानने की कोशिश। अपनी कमजोरी से लड़ने की कोशिश। किताबें-अखबार पढ़ने की कोशिश। और सीखने की कोशिश। अपने अतीत से सीखने की कोशिश। और अपने अतीत से लड़ने की कोशिश। परिवर्तन करने की कोशिश। हारने पर भी हिम्मत न हारने की कोशिश। जीतने पर गर्व से सीना फुलाने से बचने की भी

कोशिश। छोटी-छोटी संकीर्णताओं से लड़ने की कोशिश। सबको अपने साथ लेकर चलने की कोशिश।

और जो बात हमारी ठीक न लगे, उससे जिरह करने की भी कोशिश। उससे बहस करने की कोशिश। उससे असहमत होने की भी कोशिश। वह गलत करे तो उसे गलत कहने की भी कोशिश। सही को सही कहने की भी कोशिश। हमेशा अपने को जांचने-परखने की कोशिश। अपनी गलतियां समझने की कोशिश। लिहाजा कोशिश और कोशिश। परिश्रम और परिश्रम। कर्म और कर्म। ❐

Accn.No. ABN 767
LIBRARY